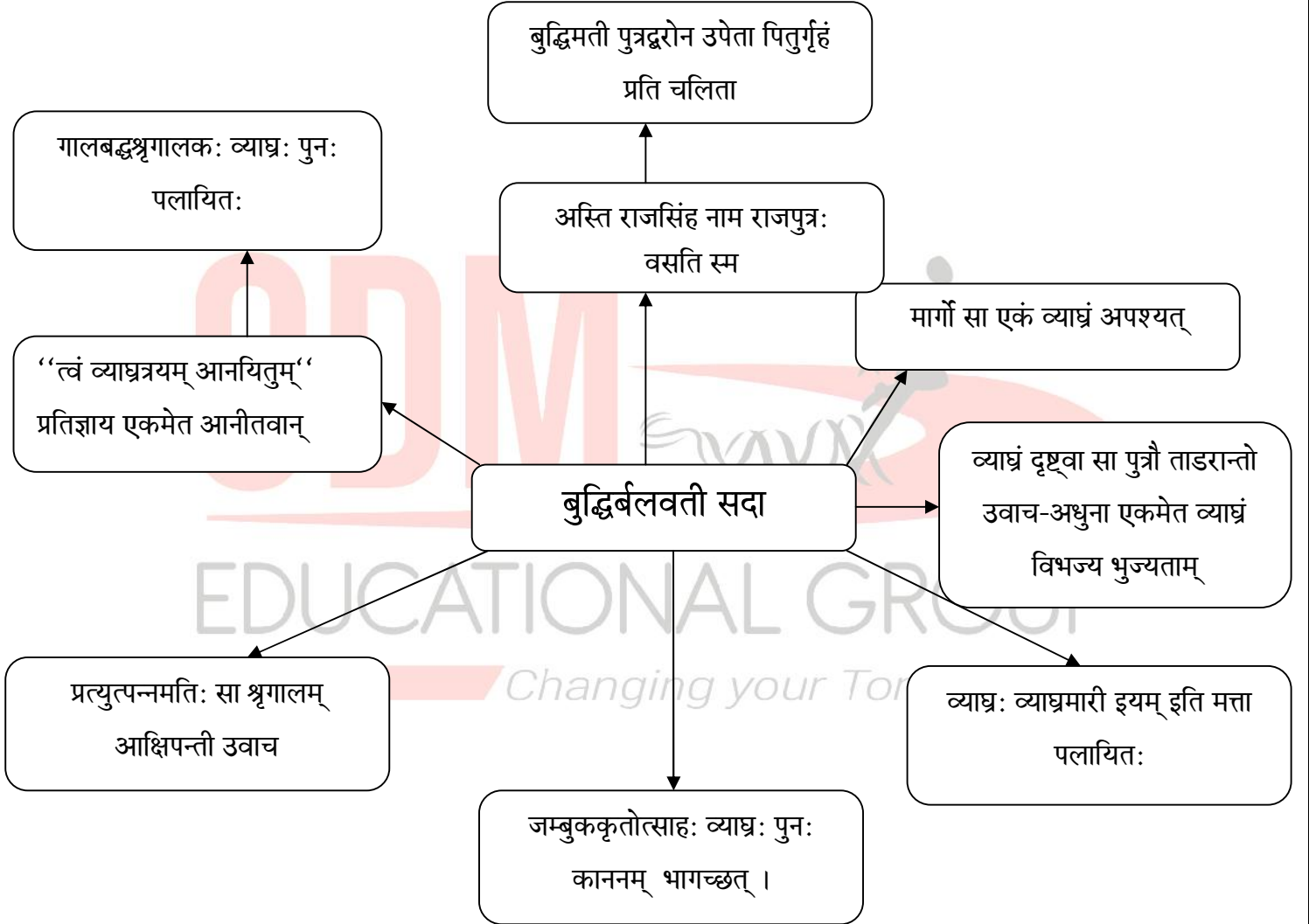


Chapter- 2

बुद्धि वलबति सदा

STUDY NOTES

MIND MAP

प्रस्तुत पाठ 'शुकसप्ततिः' नामक प्रसिद्ध कथाग्रन्थ से सम्पादित किया गया है। 'शुकसप्ततिः' के लेखक और काल के विषय में आज भी भ्रान्ति बनी हुई है। शुकसप्तति अत्यन्त सरल और मनोरंजक कथासंग्रह है। प्रस्तुत कहानी में अपने दो पुत्रों के साथ जंगल के रास्ते से पिता के घर जा रही बुद्धिमती नामक नारी के बुद्धिकौशल को दिखाया गया है जो अपनी चातुर्य से सामने आए शेर को भी डरा कर भगा देती है।

बुद्धिमती शेर को समक्ष देख अपने पुत्रों को डाँटने का नाटक करती हुई कहती है कि झगड़ा मत करो। आज एक ही शेर को बाँटकर खा ले फिर दूसरा देखते है। यह सुन 'यह व्याघ्रमारी है' ऐसा मानकर शेर डरकर भाग जाता है। भयभीत शेर को देखकर शृगाल शेर का उपहास उड़ाता हुआ कहता है कि मुझे अपने गले में बाँधकर चलो जहाँ वह धूती है। शृगाल के साथ पुनः आते शेर को देखकर बुद्धिमती अपनी प्रत्युत्पन्नमति से शृगाल को ही आक्षेप लगाती हुई कहती है कि तुमने तीन शेर देने के लिए कहा था। आज एक ही शेर क्यों लाए हो?

यह सुनते ही शृगाल सहित शेर भाग जाता है। इस प्रकार अपने बुद्धिबल से वह अपनी और अपने पुत्रों की प्राणरक्षा करती है।

Changing your Tomorrow